

Title: Need to rehabilitate the Hindu refugees from Kashmir in their respective houses.

श्री चमन लाल गुप्त : सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय की ओर सारे देश का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। आज से लगभग नौ वर्ष पहले कश्मीर से चार लाख हिन्दू निकाले गए थे, जो आज दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं। ये लोग एक जगह नहीं बल्कि कई कैम्पस में सड़ रहे हैं। इस समय सरकार एक परिवार में १५०० रुपये महीना दे रही है। आप स्वयं अन्दाजा लगा सकते हैं कि १५०० रुपये में ये कैसे गुजारा कर सकते हैं।

ये जितने भी शरणार्थी या विस्थापित थे उन्होंने यह आशा लगाई हुई थी कि जिस समय यह सरकार बदलेगी तो वे अपने घरों में सुरक्षित और सम्मान के साथ वापस जाएंगे। यही योजनाएं, घोषणाएं न सिर्फ केन्द्रीय सरकार ने की हुई हैं बल्कि मैं समझता हूँ कि जो वहां हमारी स्थानीय सरकार है, फारूख अब्दुल्ला की सरकार है उसने भी यही घोषणाएं की हुई हैं। लेकिन देखने को क्या मिल रहा है कि पहले कश्मीर से लोग विस्थापित हुए थे और अब जम्मू से भी विस्थापित होने शुरू हो गए हैं। आप जानते हैं कि कुछ दिन पहले प्रणकोट में २६ लोगों का कत्लेआम हुआ, उसके बाद देसा में १३ लोग मार दिए गए, चपनाड़ी में २५ लोगों का कत्लेआम हुआ। नतीजा यह हो रहा है कि अब ऊधमपुर और डोडा जिले से भी इसी तरह लोगों ने पलायन करना शुरू कर दिया है। बहुत सारे लोग जम्मू और आसपास के क्षेत्रों में आकर बस गए हैं।

महोदय, मेरा भारत सरकार से निवेदन है कि जो शरणार्थी या विस्थापित लोग आए हुए हैं उनके लिए एक जामा प्लान बनाएं और उन सब को सुरक्षित सम्मान के साथ अपने घरों में भेजे। महोदय, आप भी समझ सकते हैं कि कश्मीर बिना हिन्दुओं के कश्मीर नहीं कहा जा सकेगा बल्कि वह कुछ ओर ही होगा। इसलिए इन कश्मीरी पंडितों का वापस जाना निहायत जरूरी है। अगर हमने देश के सेक्यूलरिज्म को जिन्दा रखना है तो सबसे पहले हमें यह कोशिश करनी होगी, उसके लिए भारत सरकार चिन्तित हो, उनके लिए योजना बनाए, उनको अपने घरों के अंदर वापस भेजे।

... (व्यवधान)

उनकी जो सम्पत्ति नष्ट होने जा रही है उसको बकायदा रजिस्टर्ड करे, इतना ही मुझे आपसे निवेदन करना है।